आत्म–निवेदन

प्रस्तुत शोध ग्रन्थ के लिए में अपने निर्देशक डॉ. राजेन्द्र शर्मा का आभार प्रकट करती हूँ। जिनका सुयोग्य एवं कुशल निर्देशन, उचित मार्ग दर्शन व प्रेरणा, बहुमूल्य सुझाव ने इस कार्य को सम्पन्न करने में सहायता की जिनके स्पष्ट विवेक युक्त मार्गदर्शन से यह कठिन कार्य सम्पन्न हो सका । उन्होंने अपने कीमती समय में से समय निकालकर मेरा उचित मार्गदर्शन किया । इसलिए शोध ग्रन्थ के प्रस्तुत करने का पूरा श्रेय मैं अपने गुरूजी का ही मानती हुँ ।

विभागाध्यक्ष डॉ. गतिकृष्णकर, डॉ. प्रताप सिंह लाम्बा, डॉ. राजकुमार सिंह के अमूल्य अमिट स्नेह एवं सद्भावनाओं के प्रति आभार प्रकट न करना एक पुनीत कार्य की अवहेलना करनी होगी। इन गुरूजनों ने समय–समय पर मेरे कार्य के बारे में पूछा व उचित सुझाव देकर मेरे को कार्य के प्रति प्रोत्साहित किया । मैं इन सबका तहदिल से आभार प्रकट करती हुँ । जिनके उचित मार्गदर्शन ने मेरे काम को आम इस मकाम तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण सहायता प्रदान की है ।

राजस्थान विधानसभा के उपसचिव श्री महावीर जी का व श्री हनुमान प्रसाद (विधायक) का मैं बहुत–बहुत धन्यवाद करती हुँ जिन्होंने मुझे राजस्थान विधानसभा में से इस ग्रन्थ ले सम्बन्धित सामग्री को उपलब्ध करने में सहायता प्रदान की । पुस्तकालय अध्यक्ष, राजस्थान विधानसभा व अन्य कर्मचारियों का भी मैं हार्दिक आभार प्रकट करती है । जिन्होंने मेरी प्रत्यक्ष रूप से सहायता की ।

राजस्थान विश्वविद्यालय पुस्तकालय के सभी कर्मचारियों का भी मैं आभार प्रकट करती हुँ इसके साथ–साथ मैं महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के पुस्तकालय के सभी कर्मचारियों का आभार प्रकट करती हुँ जिन्होंने समय पर मेरे इस ग्रन्थ को प्रस्तुत करने में मदद की है ।

मैं उन विद्वानों का भी आभार प्रकट करती हुँ जिनकी कृतियों को पढ़ने के बाद ही इस शोध कार्य को पूरा किया गया है । मैं उन विद्वानों का हार्दिक आभार प्रकट करती हुँ जिनकी कृतियों से इस शोध ग्रन्थ के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहायता ली गई है ।

मुख्यतः इस कार्य का श्रेय मेरे पिता जी (कैप्टन रामअवतार) व माता जी (श्रीमति कमला देवी) को जाता है, जिन्होंने हर सम्भव समय–समय पर कठिनाईयों के बावजूद भी मुझे उच्च

शिक्षा प्राप्त करने के लिए हमेशा प्रोत्साहित किया । जिन्होंने बचपन से लेकर अब तक विधाध्ययप सभा के क्षेत्र में सर्वदा मेरी सफलताओं के केन्द्र बिन्दू बने रहे और मेरी प्रत्येक समस्या को विचार–विमर्श करके तर्क के आधार पर हल किया ।

इसके अतिरिक्त मैं विशेषरूप से अपने पति डॉ. राजपाल यादव का भी आभार व्यक्त करती हुँ जिन्होंने गृहस्थ जीवन में होते हुए भी मेरे विद्याध्ययन को सुचारू रूप से कायम रखा व समय–समय पर अपने व्यस्त जीवन से समय निकालकर मेरी सहायता की ।

इसके साथ–साथ ही मैं अपने ससुर जी (कर्नल रामेश्वर दयाल यादव) व सासु माँ (श्रीमति गिन्दो देवी) का भी हार्दिक आभार प्रकट करती हुँ । जिन्होंने मेरे इस कार्य के बारे में बार–बार पूछकर मुझे इस लक्ष्य को पूरा करने की प्रेरणा देते रहे । इनके सभ्य एवं शान्तिमय आचरण के कारण ही मैं गृहस्थ जीवन की कठिनाईयों के होते हुए आज अपने इस लक्ष्य पर पहुच सकी हूँ। एक बार मैं फिर इनका हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ ।

मैं अपने भाईयों (जोगेन्द्र, सुरेन्द्र, विरेन्द्र, हरेन्द्र) व अपनी सहेली सरोज ढुल का भी आभार प्रकट करती हूँ । जिन्होंने प्रत्यक्ष रूप अप्रत्यक्ष रूप से मेरे सहायता भी है । अपने छोटे भाई हरेन्द्र का हार्दिक आभार प्रकट करती हुँ जिसने अपने 'विद्यार्थी जीवन' में मुझे इस शोध ग्रन्थ के लिए काफी सामग्री उपलब्ध करवाई है । मैं अपनी प्यारी सी बेटी 'जीनत यादव' का भी आभार प्रकट करती हूँ ।

प्रस्तुत शोध ग्रन्थ को पूरा करने में जिन–जिन पत्रिकाओं, समाचार पत्र व विद्वानों की पुस्तकों की सहायता ली गई है उनका वर्णन सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि में कर दिया गया है ।

प्रस्तुत शोध ग्रन्थ को पूर्ण करने के लिए राष्ट्रीय भाषा हिन्दी को लोकप्रिय बनाने के लिए शोध लेखन कार्य हिन्दी में करने का प्रयास किया गया है ।

मैने इस शोध ग्रन्थ को पूर्णरूप से दोषरहित बनाने का प्रयास किया है परन्तु फिर भी कही न कही कोई त्रुटियों का रह जाना मानव दुर्बलता है । मुझे पूर्ण आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि मेरा यह प्रयास विद्वानों को बहुत पसन्द आयेगा व उनके स्नेह का पात्र बनेगा ।

विनीत

Rajesh Kumari

(श्रीमति राजेश कुमारी)

दिनांक 31-12-2002